माध्यामिक स्तर पर अध्यनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अध्ययन कौशल का अध्यन

डॉ. श्रीमती ममता वाकलीवाल
भ्ण्व्क्ण्ए राजीव गांधी महाविद्यालय
भोपाल

श्रीमती संगीता तिवारी
शोधार्थी, बी.यू. भोपाल.
जपूंदहपजं२०१६/हउंपसण्बवउ

सारांश —

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यामिक स्तर पर अध्यनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अध्ययन कौशल जानने की जिज्ञासा से यह अध्यन किया गया है। अध्यन हेतु भोपाल जिले के म.प्र. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अंतर्गत अध्यनरत कक्षा नवीं के ५० छात्रों एवं ५० छात्राओं को चयनित किया गया है। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यनरत १०० विद्यार्थियों के अध्ययन कौशल जानने के लिए स्वनिर्मित परीक्षण 'अध्ययन कौशल मापनी' का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी— परीक्षण के माध्यम से परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अध्ययन के आवश्यक नियमों एवं कौशलों से परिचित है विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों एवं छात्राओं में अध्ययन कौशल की तुलना करने पर उनके मध्य अंतर नहीं पाया गया है।

मुख्य शब्द— माध्यमिक, अध्ययन कौशल

प्रवेशिका —

वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था में हो रहे नये —नये नवाचारों का प्रयोग समय की आवश्यकता है। अध्ययन के क्षेत्र में कुशल एवं उच्च उपलब्धि प्राप्त व्यक्तियों की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है ताकि विद्यालयों से जो भी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके बाहर निकलें वह अपने क्षेत्र में कुशल एवं प्रवीण हो साथ ही देश व समाज के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें, ऐसी अपेक्षा शिक्षा व्यवस्था से की जा रही है। अध्ययन कौशल विद्यार्थी जीवन में सदा ही महत्वपूर्ण रहा है अध्ययन में कुशल विद्यार्थी उच्च उपलब्धि को प्राप्त करते है जो विद्यार्थी जीवन ही नहीं भविष्य में भी समाज में अच्छा जीवन स्तर प्राप्त करने में सहायक होता है।

शोध की आवश्यकता —

वर्तमान परिवेश में प्रत्येक क्षेत्र में कौशल प्राप्त व्यक्तियों की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है। जबकि हमारे विद्यालयों के पाठयक्रम में केवल सैद्धांतिकता का ज्ञान प्रदान करते है प्रयोगात्मक शिक्षा पर बल नहीं दिया जाता है जिसकी वजह से विद्यालय के बाहर जब व्यक्ति रोजगार के लिए प्रयत्न करता है तो अकुशलता के कारण उसे रोजगार प्राप्त नहीं हो पाता है जिसकी वजह से उसमें कुंठा, हीन भावना का संचार होता है...वर्मा१९९०| और वह प्राप्त की गई शिक्षा पर खिन्न होता है अकुशलता के कारण शिक्षित बेरोजगारी में भी वृद्धि हो रही है

हमारी शिक्षा व्यवस्था को अब अधिक तैयार होने की आवश्यकता है नहीं तो पढे— लिखे बेराजगारों की संख्या में वृद्धि होती जाएगी विद्यालयों में विदयार्थियों का अध्ययन कौशल बढाने के लिए अब विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। शिक्षा में कौशल विकास पर विगत कुछ वर्षो से ध्यान दिया जा रहा है जबकि अमेरिका, युरोप एवं जापान जैसे देश कौशल विकास पर अधिक ध्यान देते है आज शिक्षा में पिछड़ने का एक प्रमुख कारण जीवनोंपयोगी कौशल विकास पर हमारी सरकारों का ध्यान नहीं देना भी है।

व्यक्ति के जीवन में ज्ञान की आवश्यकता सदा एवं प्रत्येक स्तर पर बनी रहती है। वह सदैव अपने अनुभव चिंतन—मनन दवारा वातावरण से कुछ न कुछ ज्ञान प्राप्त करता रहता है। अध्ययन एक ज्ञानात्मक कौशल है जो बालक को रूची के अनुसार ज्ञान ग्रहण करने एवं उसमें प्रवीण होने का बल प्रदान करती है। रूची एक प्ररक शक्ति है जो हमें किसी कार्य को करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है ...चेंग२००५| परंतु अधिकांश छात्रों की अध्ययन में रूचि नहीं होती है। यह सत्य है, कि श्रेष्ठ बुद्धि के कई छात्र मंद गति से पढ़ते है और इसलिये वे अपने अध्ययन को प्रभावशाली नहीं बना पाते है, इसके अतिरिक्त ऐसी शोधों का भी अभाव नहीं हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि श्रेष्ठ बुद्धि के छात्र अध्ययन की गलत आदत के कारण उच्च उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाते हैं।...टोलचिंस्के२००३|

म.प्र. शिक्षा संबंधी एनुअल स्टेट्स रिपोर्ट (२०१०) के मुताबिक पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाले ५० प्रतिशत छात्र दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों के स्तर के शब्द भी पढ़ने में सक्षम नहीं थे। म.प्र. शिक्षा संबंधी (२०१४) में आई एनुअल स्टेट्स रिपोर्ट के अनुसार तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले ७८ प्रतिशत और पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाले लगभग ५० प्रतिशत छात्र दूसरी कक्षा के स्तर के शब्द नहीं पढ़ पाते। पांचवीं कक्षा के २६ प्रतिशत छात्र गणित के सामान्य भाग भी नहीं कर पाते सरकारी हो या प्रायवेट, स्कूलों के आंकड़ों में कोई खास फर्क नहीं है। (म.प्र. एनुअल स्टेट्स रिपोर्ट ऑफ एजुकेशन)

समस्या कथन —

माध्यामिक स्तर पर अध्यनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अध्ययन कौशल का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य —

माध्यामिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अध्ययन कौशल का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

१.१ माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।
१.२ शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।
१.३ अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।

समंक संकलन एवं शोध विधि—

यह सर्वेक्षण कार्य षेपाल जिले के विद्याथियों का अध्ययन कौशल जानने की जिज्ञासा के किया गया है प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधार्थी ने स्वनिर्मित अध्ययन कौशल परीक्षण का निर्माण किया है जिसमें विद्यार्थियों के लेखन, वाचन, एकाग्रता, समय प्रबंधन, समस्या समाधान, सहयोग इत्यादि सभी अध्ययन क्षेत्रों के प्रश्नों को प्रश्नावली में शामिल किया गया है। प्रश्नावली के निर्माण में विषय विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर उनके द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करके इस उपकरण का निर्माण किया गया है। उपकरण की सामग्री वैधता, पद वैधता व निमार्णात्मक वैधता का पूर्णरूपेण ध्यान रखा गया है उपकरण की विश्वसनीयता के लिए अर्धविभक्तार्थ विधि एवं पूर्व—परीक्षण व पश्च—परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या—

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी—टेस्ट का प्रयोग किया गया है। जो अग्रलिखित तालिका में प्रदर्शित है।

५॰१ माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक १ माध्यमिक स्तर के छात्र एवम छात्राओं के अध्ययन कौशल में अंतर

अध्ययन कौशल	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी . मान	स्वतंत्रता अंश	विवेचना
छात्र	५०	१०१	८ण्६	०ण्२१	९८	**असार्थक**
छात्रा	५०	१०२	९ण्४			**असार्थक**

स्वतंत्रता के अंश ९८, सार्थकता ०.०५ के स्तर पर१.९६,

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर क्रमशः १०१ तथा १०२ है प्रमाणिक विचलन ८.६ तथा ९.४ है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जांच करने पर टी का परीकलित मान ०.२१ प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्र अंश ९८ का सारणी मान, सार्थकता ०.०५ के स्तर पर १.९६ है जबकि प्राप्त टी का मान ०.२१ है अतः स्पष्ट है कि टी का मान सारणी के मान से कम हैए जिससे यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है। यह सत्य है एवं परिकल्पना स्वीकृत होती है।

ग्राफ क्रमांक १ माध्यमिक स्तर के छात्र एवम छात्राओं के अध्ययन कौशल में अंतर

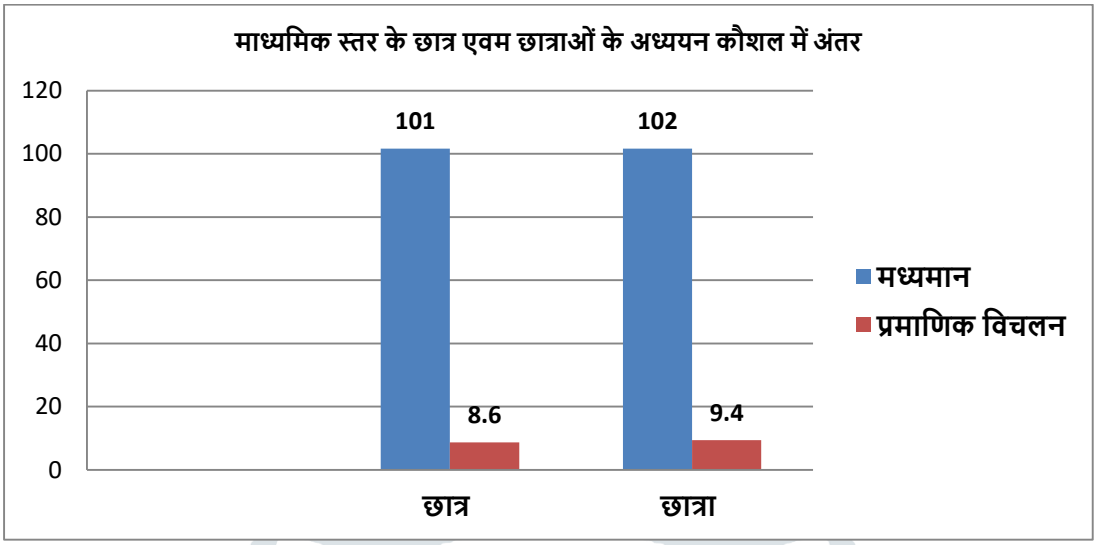

Ho२ शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक २ शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवम छात्राओं के अध्ययन कौशल में अंतर

अध्ययन कौशल	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी . मान	स्वतंत्रता अंश	विवेचना
शासकीय छात्र	२५	१०२	८.७	०.१४	४८	**असार्थक**
शासकीय छात्रा	२५	१०१	१०.३			**असार्थक**

स्वतंत्रता के अंश ४८, सार्थकता ०.०५ के स्तर पर १.९६,

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर क्रमश: १०२ तथा १०१ है प्रमाणिक विचलन ८.७ तथा १०.३ है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जांच करने पर टी का परीकलित मान ०.१४ प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्र अंश ४८ का सारणी मान, सार्थकता ०.०५ के स्तर पर १.९६ है जबकि प्राप्त टी का मान ०. १४ है अत: स्पष्ट है कि टी का मान सारणी के मान से कम हैए जिससे यह ज्ञात होता है कि शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।
इस प्रकार निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है। यह सत्य है एवं परिकल्पना स्वीकृत होती है।

ग्राफ क्रमांक २ शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवम छात्राओं के अध्ययन कौशल में अंतर

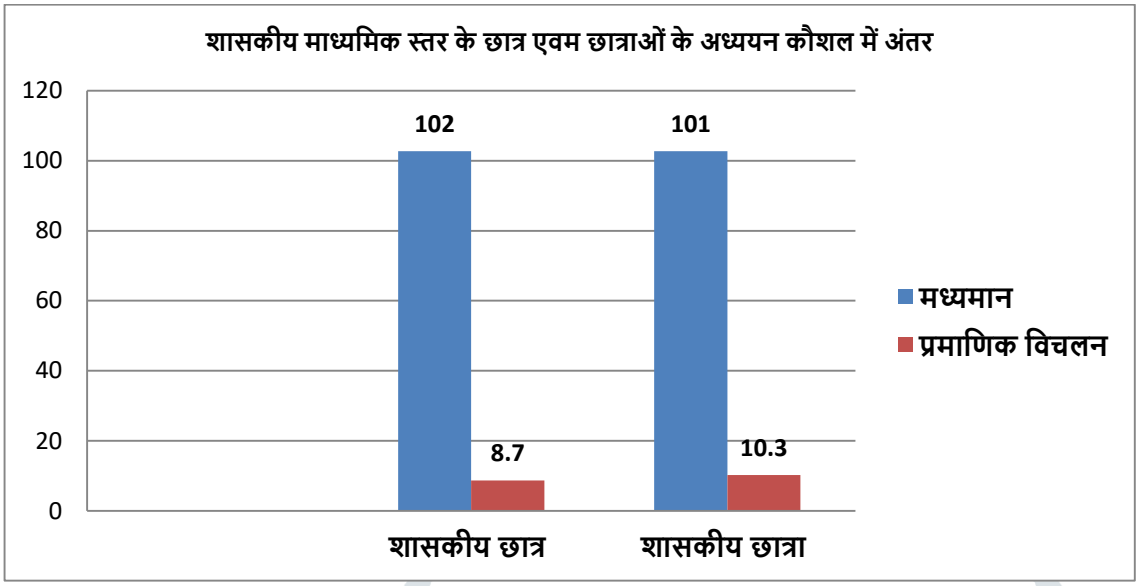

५.३ अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक ३ अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवम छात्राओं के अध्ययन कौशल में अंतर

चर अध्ययन कौशल	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी - मान	स्वतंत्रता अंश	विवेचना
अशासकीय छात्र	२५	१०३	८ण्६	०ण्१३	४८	**असार्थक**
अशासकीय छात्रा	२५	१००	८ण्५			**असार्थक**

स्वतंत्रता के अंश ९८, सार्थकता ०.०५ के स्तर पर१.९६,

विवेचना

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर क्रमशः १०३ तथा १०० है प्रमाणिक विचलन ८.६ तथा ८.५ है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जांच करने पर टी का परीकलित मान ०.१३ प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्र अंश ४८ का सारणी मान, सार्थकता ०.०५ के स्तर पर १.९६ है जबकि प्राप्त टी का मान ०.१३ है अतः स्पष्ट है कि टी का मान सारणी के मान से कम हैए जिससे यह ज्ञात होता है कि अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है। यह सत्य है एवं परिकल्पना स्वीकृत होती है।

आलेख **क्रमांक ३ अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवम छात्राओं के अध्ययन कौशल में अंतर**

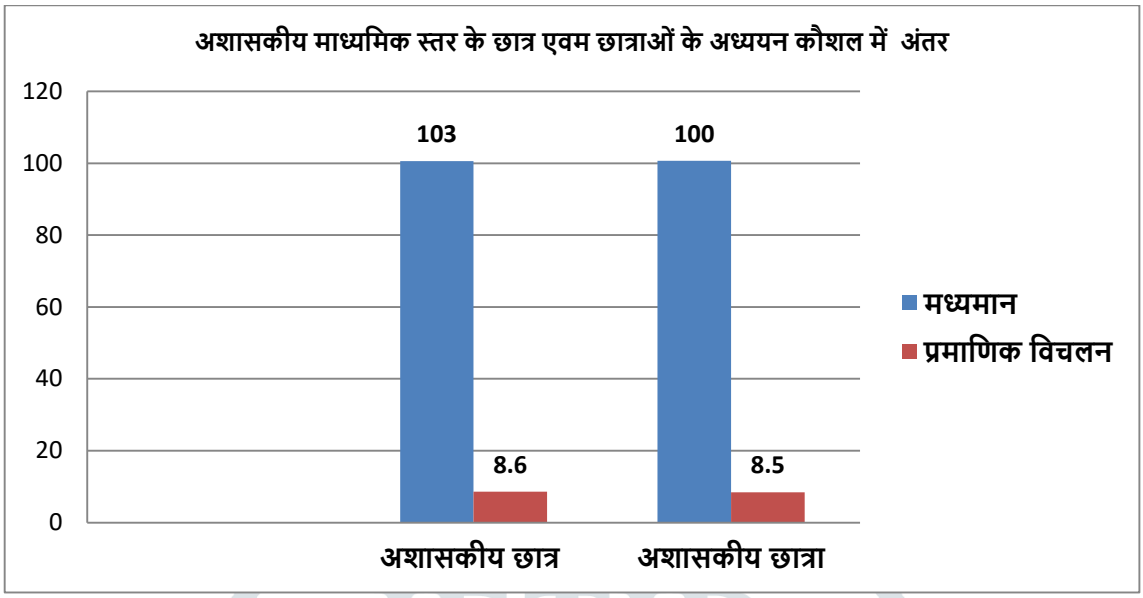

निष्कर्ष

१. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है। यह सत्य है एवं परिकल्पना स्वीकृत होती है।

२. शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है। यह सत्य है एवं परिकल्पना स्वीकृत होती है।

३ण अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन कौशल में सार्थक अंतर नहीं है। यह सत्य है एवं परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सामान्यीकरण —

माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़नें वाले विद्यार्थी अलग क्षेत्र विशेष से आते है परंतु इसके बाद भी दोनों तरह के बच्चों के अध्ययन कौशल में अंतर नहीं है। अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अध्ययन के आवश्यक नियमों एवं कौशलों से परिचित है इसलिए दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर उनके मध्य अंतर नहीं पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची—

- चेंग एवं चेंग ...२००८| स्टडी दी इंटरिलेशनशिप विटवीन सिनियर हाईस्कूल स्टूडेंट्स साइंस अचीवमेंट एण्ड देयर सेल्फ कॉन्फिडेंस एण्ड इंटरेस्ट इन साइंस, जर्नल ऑफ साइंस एजुकेशन वाल्यूम ३०...९|. ११८३—१२००
- टोलचिंस्के ...२००३| दी क्रडल ऑफ कल्चर एण्ड व्हाट चिल्डन नो अबाउट राइटिंग, माहवाह
- न्यू जर्सी: एल अर्लबाम एसोसिएट्स २००३ ४ठछ छव्ण्९७८०८०५८३८४३५
- पांडे, राम सकल (२००५): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

- मादान, पूनम, गर्ग, सुषमा (२०१५—१६) भारत में शिक्षा, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।
- शर्मा, आर.ए. (२००६), शिक्षा अनुसंधान, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
- योगेन्द्रजीत प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल हिन्दी भाषा शिक्षण हिन्दी भाषा और विज्ञान बोध
- विनोद पुस्तक मंदिर मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी
- गोपाल कृष्णण कार्तिकण स्टूडेंटस टेकल स्ट्रेस एंड बोर्ड एग्जाम जीम जपउमे वि प्दकपं
- ळनसउंदए समपेसपमय बीववसए प्दहतपक ;२०१३द्ध जीम पउचंबज वि दवद बवहदपजपअम ापसस वद वनजबवउम वित लवनदह चमवचसमरू मकनबंजपवद मदकवूउमदज विनदकंजपवदरू५९ए
- टवद जनउद दृ ंजण्संण;२०११द्ध जीम भ्नदहतल डपदक रू प्दजमससमबजनंस बनतपवेपजल पे जीम जीपतक चपससंत वि बंकमउपब चमतवितउंदबमण च्मतेचमबजपअमे वद चेलबीवसवहपबंस बपमदबमण थ्मइ ११ए २०१२
- पमदकदमत डवेबीम ;१९९८द्ध ज्मगज ादगपमजल रू जीम जंजम वि जीम ंतज छमू ल्वतारू छमू ल्वतारू च्समदनउ च्तमे च्च२५९ प्ठछ ९७८० ३०६४७ १४५२ण ीजजचेरूध्धैबीववस इवंतकेण्बंझ२०१५ध्०८
- जंदहसए मूतदमतए तवइपदेवद मजण्ंस ;१९७०द्ध ममिबजपअम जनकल छमू लवता! भ्लचमत — त्वूण